

तिका स्तोत्र नये विरही योग ॥ ॥ प्रथम चरी उच्यते वृत्ता अविः  
माहाकालिदेवता गायत्री दुर्गा आशक्ति ॥ दक्षवीनेका वीज  
अग्निष्टुतं महाकालिप्रीत्यर्थे प्रथम चक्रं जयविनीयो  
ग ॥ ४ ॥ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖  
चमुखा वाहणी दुर्गायनी वेदमयी महेश्वरी कौमा  
री ब्रह्मायनी महालक्ष्मी ॥ अष्टमाविकारा ५ ५ ५



गोशरी  
चरणी

१. १. ~~१. १. गोशरी चरणी~~ ॥ ~~१. १. गोशरी चरणी~~ ॥ गोशरी  
सुयोननयो ओमनु कथे टे छु स ॥ नीशामवतः दुपत्पी वीजरा.  
उद तोनम ॥ १. ॥ माहा माया न तावेराः यथासर्वं टरा धीप ॥ स.  
व सुव माहाभाग शावरी लनयोरवे ॥ १. ॥ स्वाशेवी वेतरेपुव  
चैव वंश सुसुभव ॥ भुरथो न भुरथो भुसमस्ते क्षीटीमरादले  
॥ १. ॥ टस्यपाल तयस्य पुआपु चानी वोरशान ॥ व सुव सुव वयो राम

ASHA ARCHIVES

893

अपा कोला वृष्टि निनस्तदा ॥ १. ॥ टस्ये ते ह भवे सु सु सटीपु  
वत्स हरादीन ॥ पुनेट पीसटे भुके कोला वीदसि भी जीत ॥ १. ॥  
टटस्य पुर्वमाया तो नीज देरा त राधापि भवेत् ॥ आको तस्य महा  
भाग स्तेस्तडा पुर्वसारिभी ॥ १. ॥ सुमाये वीलोभिर्हृते दुर्वत्सपु  
रात्मभी ॥ कोशो वत्स चाप हृते त चापि स्वपुरे टट ॥ १. ॥ टटो मृगया  
आ जेन हृद स्तीत्यमभुपात ॥ टका की हृदमास्ते अगा मगहनै



शावर्ग वनं ॥ १ ॥ स त वा स भ म डा क्षी द्वि अव र्ज स्य मे ध स ॥ २ ॥ प्र शी त र ना  
 २ प हा की र्ग मु नि शि श्यो प सो भि र्ग ॥ ३ ॥ त स्थौ की चि त्स का ल चः  
 मु नि नी ते रा स त्क त ॥ इ त र्धे त र्च वि च र त्ता स्मि न्म नि ष रा भ्र मु  
 ॥ १० ॥ सो चि र्ग प त हा त र्ग म स त्वा कृ ष्ण चे ट व ॥ स त्पु र्धे पा सी ट पु र्धे म  
 या ह वि पु न हि त त ॥ ११ ॥ स भृ त्ये ते र स भृ त्ये ध र्म त पा प्य ते न वा ॥ न  
 जा व श प्र हा नी मे गु रो रु सि स दा स द ॥ १२ ॥ स म र्धे हि व स पा न का

राम  
 २

व भो गानु प य स्य टे ॥ ये म सा हु ग टा नि त्पं प्र शा द ध न भो ज वे ॥ १३ ॥ अ  
 नु वृ त्तं धु र्व ते द्य कु र्व त्प न्ये म ही भृ ती ॥ भा र्ग व ग्ध य शि ले र्ते कृ षी भ  
 स ट ट व्य र्ध ॥ १४ ॥ स चि त् लो ति दु र्धे न कृ य का लो ग त्प व्य ति ॥ स  
 ट श्र न्य च स त त च न या मा स पा र्थि व ॥ १५ ॥ ट व वि प्रा भ्र मा भ्या से वे  
 श्र म्भे क द द श मे ॥ स प वृ त्त न क र्त्त भो हे तु र्चा ग म ने र्क ॥ १६ ॥  
 म र्गो क ई व क र मा त्वा दु र्ध ना ई व त स्य से ॥ इ त्या क र्ता वि च त्त स्य भु प



सावली टेपुगयोदिती ॥ १७ ॥ प्रपुवाच सतीवैस्यः प्रभुपावनतो नप ॥ ~~दे~~  
 ३ उवाच ॥ त्वमाधिसर्गसर्वेस्यो ह सुत्पनेधनिराणीकुसे ॥ १८ ॥ पुनदाहे  
 निरस्तश्चः धनसोभायसाधुभिः ॥ विहिनस्वअनेदरपुत्रयद्यमेः  
 धन ॥ १९ ॥ वनयभ्यागतो दुष्टिः विरस्तश्चाप्रवर्धुभिः ॥ सोहनः  
 वेगिपुत्राणीकुसशाकुसलातिर्क ॥ २० ॥ प्रवृत्तिस्वअनानीचहाः  
 रानीपात्रशीटिथता ॥ किन्तुदेवागहचो नमस्तेमकिनुसाप्रती ॥ २१ ॥

राम  
 ३

कथंते किन्तु मभ्यादुर्धताः किन्तुमेतता ॥ २२ ॥ उवाच ॥ ऐर्धिरस्तो भवाः  
 नह्युदेपुत्रेहरदिभिदने ॥ २३ ॥ तेषुकिंभवतस्नेहः सनुवभ्रासिमाः  
 नत् ॥ २४ ॥ उवाच ॥ एवमेष्टथाप्राहः भवानामदतवको ॥ २५ ॥ कः  
 रोमिनवध्रातिससनिष्ठुतीसन ॥ जैसत्यअवितस्नेहधनलुचेनिराः  
 कृते ॥ २६ ॥ पतित्वअनहाहचः हार्दितयेवसेसन ॥ किमेतन्नाभिः  
 जानापिः जानत्रपिमहासते ॥ २७ ॥ यत्पुमपुवनचिते गुरुतोव्यपिः



४  
 गार्गी वंधुषु ॥ तेष्वाकृते मे निःश्वासा दोर्मनस्य च आयते ॥ २४ ॥ करोमिः  
 किं जन्म त्रस्तं स्वपितृभ्युनिषु ॥ ~~अनादितो यो यो~~ ॥ ८ ॥ ततो  
 सहितो विपुलमुनिः समुपस्थितो ॥ २५ ॥ समधिर्ना भवेत्स्यात्स  
 वपाथिवसं त्रम ॥ २६ ॥ त्वीदृशे यथा न्यायः यथा ह ते न सीविह ॥ २७ ॥  
 उपविष्टो कथाः कास्वि च कतुर्वेश्य पाथिवि ॥ ~~यजो वाच~~ ॥ भगवत्स्वा  
 मरुपुष्टुमिच्छामेकं वदस्व तत् ॥ २८ ॥ ५४ स्वाय यन्मे मराशः ॥ राम

स्वर्चिनाय ट दा विना ॥ मम त्वंगतरा अस्य रा अणो गे खरित्ते खपिः  
 ॥ २९ ॥ यान तोपि यथा अस्य किमेतन्मुनिस्तत्र म ॥ भुयवनिवने  
 पुर्वेर्द्योर्भवेत्सद्ये गत ॥ ३० ॥ स्वजने न च शम्भुः स्तुष्टुहादि  
 स्तथा व्यति ॥ स्वमेव त आहं च छावप्यत्यत दुश्खितो ॥ ३१ ॥ द्यदो  
 खेपि विद्यतः मम त्वाक्छुमानसो ॥ तत्किमेतन्महाभाग जन्मो हो जा  
 निवोरपि ॥ ३२ ॥ ममीत्यच भवत्येयं विवेकी धस्य सुहृत् ॥ ~~मयि यथा~~



शावरी  
५

दिवी धा प्रारि नः केचिद्वा वाव धास्तथा परे ॥ ३३ ॥ केचिदिदीन तथा  
 रात्रौ प्रारि चस्तु ल्य दृष्टव ॥ आनि रोगे मनु आः सत्य कि नु ते नहि केवः  
 ले ॥ ३४ ॥ यतो हि आनि नः सर्व वस्तु पक्षि मृग ईय ॥ आनं च तन्मनुः  
 नीय तेषां मृग पक्षि रागा ॥ ३५ ॥ मनुष्या च युतेषां तु ल्य म न्यस्तथो  
 भयो ॥ आने पितृणां पश्येताः न्यत गां च च ॥ ३६ ॥ क न मो-ता दः  
 ता-मो हात्पी पु माना वपि शुधा ॥ मनुष्या मनुष्यां बु साभि जा याव

छावः २

र म  
५

शुभा वृत्ति ॥ ३७ ॥ लोभात्पुत्रपुत्रपकारा यो वेता कि नु पस्यसि ॥ तथापि  
 नम ताव ते मोह गते निपातिता ॥ ३८ ॥ महा माया प्रभावे नर्त्त शारि स्थिति  
 कारिण ॥ तन्मा च विस्मय कार्ये योगीन्द्रा जगत्पते ॥ ३९ ॥ महा मा  
 या हे रश्मिंषां नया संमो ह्यते जगत् ॥ आनि वा मपि चेतांसि देवि भगः  
 वती हि सा ॥ ४० ॥ वलादा रुष्य मो हायः महा माया प्र जहति ॥ तथा  
 पि श्रो यते विस्तेः जगते तच्चरा चरं ॥ ४१ ॥ मेखी प्रभ चावर दीनः



शावरी सांभवभिसुक्तम् ॥ सावित्रा परमा सुक्ते हेतुभूता सनातनी ॥ ४३ ॥  
 ६ सैसारवीधुहेतुश्चः सेवशर्वेस्वरे श्वरी ॥ ~~राजीराच~~ ॥ भगवन्  
 काहिला देवि महा माये देवा भवान् ॥ ~~४४~~ ॥ बुबीती कथमुपना  
 साकर्मिकस्वाशुकी द्विज ॥ यत्त्वा प्रभावा च सा देविः यत्स्वरूपा  
 युद्धभूपा ॥ ~~४५~~ ॥ तत्सर्वश्रोतुमिच्छामिः त्वतो ब्रह्मविदावर्त ॥ ~~४६~~ ॥  
~~राजीराच~~ ॥ नीत्येवमा जगत्सुतिस्तया सर्वमिदं प्रभो ॥ ~~४७~~ ॥ राम  
६

तथापि तत्समुत्पत्तिः ब्रह्माश्रुयता मम ॥ देवनां कार्यमिदं प्रथमाविः  
 भवति सा पहा ॥ ~~४८~~ ॥ उच्यते तितहा लोकेः सानित्यार्थमिवावते ॥  
 जोगनी डापदा विहन्तु जगत्के कर्त्तव्यं कते ॥ ~~४९~~ ॥ आस्तियं श्री मम भः  
 अकल्याणं भगवन् प्रभु ॥ तदा हावसुरो बोरो विख्यातो मधुके ॥ ~~५०~~ ॥  
 विहन्तु कर्त्ता ततो भूतोः हं भुवनात्ता मुद्यतो ॥ सनाभिर्कमलो विहन्त्याः स्थिः  
 तौ ब्रह्मा प्रजापति ॥ ~~५१~~ ॥ दृष्टा तावत्सुरो चोद्रेचे प्रसुप्रश्च भना दगा ॥



शारंगी  
७

दुष्टविभोगनीडानामेकाग्रहदलस्थितं ॥ ५१ ॥ विहोपुभुधनाः  
धायः हरे हरिनेत्रकलीलय ॥ ५२ ॥ विहोपुभुधनाः  
तिस्रहकारिणी ॥ ५३ ॥ स्तोमिनीडाभगवतिः विहोपुभुधनाः  
त्वत्त्वहात्वत्त्वधाः त्वत्त्ववकारस्य रात्मिका ॥ ५४ ॥ सुधात्वत्त्वक्षेत्रि  
त्यत्रिधा मात्रात्मिकास्थिता ॥ ५५ ॥ पुर्धमाशस्थितानि त्रैः यात्रुचार्यावि  
सेधत ॥ ५६ ॥ त्वमेवसा त्वसावित्रिः त्वदेविष नलीपरा ॥ त्वयेत

राम  
७

क्षयतेविस्वरयेतत्स्वयमेव जगत् ॥ ५७ ॥ त्वयेतत्पापदेविः सः  
मत्स्येतेचसर्वदा ॥ विस्वरुद्राविस्वरुद्रा त्वत्स्थितिर्द्वयाचपात्रनेत्र  
॥ ५८ ॥ त्वयासहतिरुपीटेः जगत्स्यजगत्स्य ॥ महाविद्यामहा  
मायाः महासेधा महास्मृति ॥ ५९ ॥ महासोहाचभगवती महादेवि  
महत्सुरी ॥ प्रकृतिस्त्रिचसर्वस्यः गुणात्रयविभाविनी ॥ ६० ॥ का  
लात्रिमहात्रिः मोहात्रिचक्षुणी ॥ त्वत्प्रतीकमीश्वरित्वं ह्यत्वं



शिवली  
८

सर्वयोगसङ्गती ॥ ५ ॥ लो जापुष्टिस्तथापुष्टिः त्वैसाति छाटिरे  
वच ॥ त्वकीनीभुलिनीद्योडागरडीनीचकीनीटथा ॥ ६ ॥ राखिनी  
वाचिणीवागाः भुस्तुदीपणिधापधा ॥ शोम्यामोम्यटनाशेवाः सोमे  
भ्यस्त्वानिभुदेरेनां ॥ ७ ॥ परणीपनीणीपनमात्वेमेवपुमेभ्वरी ॥  
ऊहृपंचकिंचित्कचिः इस्तुसदशद्वारिबन्धिकेत्समस ॥ ८ ॥  
सर्वश्यपासकीमात्वेः कीखयेसेस्तदमेया ॥ त्वैयाअगतश्चेष्टा

राम  
८

अगतापातीतोअगर ॥ ९ ॥ सोपिनिडावसः नितं कस्त्यास्तोतुमि  
हेखा ॥ विह्वुशरिनग्नहर्गः महमिहानटवच ॥ १० ॥ काटितास्ते  
यतोहस्त्याकस्तोतुं कालिमीभवेत् ॥ स्तान्त्वमिन्धप्रभावेस्वेः लहोरेदे  
विमस्तुता ॥ ११ ॥ मोहेयेतेदुष्टवर्षावस्तुरैः मधुकेटभो ॥ प्रबोधच  
अगतत्त्वामिनियतामश्रुतोल्बु ॥ १२ ॥ बोधश्चरूपतामस्यः हृत्तु  
मेतोमहासुरो ॥ कायिहवाच ॥ सर्वस्तुदग्नदादेवितामसिहचवेधसा



शावली  
५

॥ १ ॥ विद्वतोऽप्रबोधनादर्थयनिर्हनुमधुकेरभो ॥ न चास्य नीमिः  
कावाङ्मुहदयभ्यस्तथोरसः ॥ २ ॥ निर्गम्यदर्शनेरस्थौबुद्धिरोप  
कन-मरी ॥ ३ ॥ ततोचजर्गनाथोस्तयामुक्तो भगवद्देव ॥ ४ ॥ एका  
नवेदिसयनाततः दृष्टदशोचतो ॥ मधुकेरभोदुरात्मानावतिवीर्यः  
पराक्रमो ॥ ५ ॥ कोधरलेक्षनीवधुः बुद्धिर्लक्ष्मीधनितोयुयो ॥ सः  
मुत्थायदृष्टत्ताभ्योयुधेभगवाकुरी ॥ ६ ॥ पिवससीहस्तानि

राम  
५

काङ्मुहदुरलोपिभु ॥ तावप्यतिबलो-मत्तैः सहसायाविमोहितो ॥ ७ ॥  
उक्तवतोव नोस्मत्तोविद्यमानितिकेसर्व ॥ ८ ॥ भगवानुव ॥ भवेतामयः  
तेतुस्तोः समवध्यावुभावपि ॥ ९ ॥ किंमयेनवरेनाचः सुवावृद्धिः  
तमया ॥ १० ॥ वचिताभ्योभितितदासर्वमायोमयैभगवत् ॥ ११ ॥  
विलोप्सताभ्योगतितोः भगवी-कमलेदन ॥ १२ ॥ प्रितवस्यस्थवयुः-शलाः  
व्यर्त्तनपुरावयो ॥ १३ ॥ भुवाभिनपत्रोपिस्तमितेनपरिहृता ॥



शावर्णी  
१०

॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ तथैषु क्ता भवता सः शैवे च क ग दा भृता ॥ ७७ ॥ क  
त्वा च केरा वेक्षिन्वा जघने शिरसी तयो ॥ ७८ ॥ इति श्री मातृगण्डे  
यपुराणे शावर्णी के म न न्तरे देवि महात्मे सधु के ट भव धः पुथ मः  
ध्याय ॥ १ ॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ देवा सुर भव द्युर्धुर्ग म द्र स तै पुता ॥  
महिषे सुराणां मधिप देवाणां च पुरं हरे ॥ २ ॥ त वासुदे म हा वीर्यैः  
देवैः न पत भित ॥ श्रीत्वा च सकली देवाः नीडो मुन्महिया शूर ॥ ३ ॥

राम  
१०

ट ट स्य राजिता देवा पद्म जोरिण प्र आपती ॥ पुरस्कृत्य ग दा स्त व प वे स ग ह द सु तौ  
॥ ४ ॥ यथा क्षित तयो स स्त द्र म हि वा सु र चि वि त न ॥ वि द वा क थ या मा सु दे वा भि भ  
ये वि स्त र ॥ ५ ॥ स र्ये द्र ग न्ध नि ले द नी य म न्ध क रू ना स्य च ॥ अ न्ये वा चा धि का रा स  
स्य य म्वा धि ति षु ति ॥ ६ ॥ स्वर्गा रि रा क्ती सर्वे ते न दे व ग रा म्वा ॥ वि च र मि  
य धा म र्वा म हि ष न दुरा त्म नी ॥ ७ ॥ स त द्र क थि र्म स र्वः म म रा र वि चे षी त म् ॥ सर  
रां च प्र प न्ना स्मो व ध स्त स्य वि चि त्प ती ॥ ८ ॥ ~~नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥ इति श्री सौदे वा नी व चा  
व



शिवगी  
११

सिमधुसुदनी॥ कुतिचका कोपसि भुशच भुशु की कुटि ली च भौ ॥ ६ ॥ ततोती  
कोपपुर्णस्य चक्रिणो वदतत ॥ निश्च काममह ते जो ब्रह्मरासै करस्य च ॥ ७ ॥  
अनेया चैव देवानी शकादिनी च सरिररु ॥ निर्गतं सुमहते अस्त चैव स मग  
दत ॥ ८ ॥ भुतीव ते असः कुत ज्वलं भिगिव पर्वतं म ॥ ९ ॥ दृष्टुं सुखास्त व  
ज्रागव्याप्रदिगीतरी ॥ १० ॥ भुतली तव तं न अ सर्व देव शरीरि ॥ रक्त ये त  
दं भु नारी व्यास गो कत्रयं त्रिया ॥ ११ ॥ यदं भु छी भवते अस्ते नाप पत तं

राम  
११

सुखी ॥ या गेन चा भव के सा वा दपो विदुते असा ॥ १२ ॥ सोम्य नस्त न यो पुर्मि  
मछा चैव देता स हस ॥ वरु ने ला च अपा र्णः न त वस्ते अ सा भव ॥ १३ ॥ बुद्धिं ज्ञे  
जसा पादो त दं गुणार्थु ते असा ॥ वसुनी च करं पुत्य को वेर रा च नासिका ॥ १४ ॥  
तस्यास्त दं मा सै भु ना पुजा पते न ते असा ॥ न प न जी न यी रा मे तथा पाव कते  
जसा ॥ १५ ॥ भुवो च भव्य यो स्ते अ भव नी व नि स त्य च ॥ अनेया चैव देवानी स म  
वस्ते अ सा शिवा ॥ १६ ॥ त त स्य म स्ते देवानी ते जो र्ग शी स मु भु द वी ॥ नां त्वि लो



शावर्णी  
१२

अथमिदं ग्राह्यं सप्तमं हि सा हिम्ना ॥ ११ ॥ ततो देवास्तद्गतास्त्येः स्वनिष्ठाः  
यावुधानि च ॥ शुक्लैस्तुलादिभिर्द्रव्यैः ददौ तस्य विना कद्रुक ॥ १२ ॥  
चैर्कीचैर्दन्तैश्च हस्तैस्तुल्यो घटश्च चकत ॥ शर्मा च वतला सक्तिः ददौ तः  
स्य कृताञ्जनी ॥ १३ ॥ मास्तुर्दन्तैश्चार्थी वाराणपुरे तथेष्टुधी ॥ वसुभिः  
कुस्तुल्याश्च कुलिशा दमराधिप ॥ १४ ॥ ददौ तस्य सहस्राधो घटायैः  
दरवतांस्तु जात ॥ कालादं ददौ घटो दं ददौ पालीचातु पतिर्ददौ ॥ १५ ॥ राम

१२

पुत्रावतिश्चाद्या मासीः ददौ तु स्नाकर्मफलम् ॥ समस्तरोमकुपेषु निजः  
रस्मीदिवाकर ॥ १६ ॥ कालाश्च दन्तवावर्जितस्ये चर्मचनिर्मलम् ॥ क्षिः  
रो दद्रुचामसं हारः स भरे च तथा त्वरे ॥ १७ ॥ तुदाकर्म तथा दिव्यैः कुं  
राडलोक राका निच ॥ अर्द्धचतु तथा शुभैः केपुर्गैः सर्ववाङ्मय ॥ १८ ॥  
तुष्टुर्गैः विमलोत्तुष्टुर्गैः वेकमल्लुत्तुर्गैः ॥ अंगुलिपकरत्नीः समस्तारवः  
द्रुष्टुर्गैः युच ॥ १९ ॥ विमो कर्मा ददौ तस्यैः परं सुवातिः निर्मलम् ॥ श्रीः



शारंगी

१३

स्वायेकरुणानिर्गता तथा मेधं च दीप्तनी ॥ ३० ॥ भुक्ता नर्यकभासाः  
सिरस्युरसिचापरी ॥ ३१ ॥ अली विस्तस्येव कर्जं चातिसोभन ॥ ३२ ॥  
हिमवी-वाहनैर्महोरत्नानि विविधानि च ॥ ३३ ॥ ददावस्तु यस्तुरवापानः  
पाचधराधिप ॥ ३४ ॥ मेधश्च सर्वनामेशोः महामनिविभूषितं ॥ नाग  
हारं ददौ तस्यै धत्ते यपिधिषीममी ॥ ३५ ॥ भुक्तेरपि सुरैर्देवीः भुवरो  
रप्युधैस्तथा ॥ समानिता नारी देव्योः सा तहासमुद्रमुद्र ॥ ३६ ॥ न

राम

१३

स्यानादेन घोरिरागं कस्तना ॥ ३७ ॥  
महानभुत् ॥ ३८ ॥ चक्षुर्भुक्कलोलाकाः शमुडार  
चागवस्तु धाचे सुः संकलाश्च महिधरा ॥ ३९ ॥ जयेन्निदेवाश्च भुक्ताः  
तामुचुर्महस्यवाहिनी ॥ ४० ॥ सुसुप्तनयश्चेत्तु भक्तिनमोऽस्तु तस्यै  
॥ ४१ ॥ ६४ समस्तशं भुक्ते वैलोक्य मम राय ॥ ४२ ॥ स न दारिद्र्यलसे  
न्यसेत्समुद्रस्थुर्ददयुधा ॥ ४३ ॥ आ किमतीदृति कोचो दाभाया



शिवगी  
१४

महिषासुर॥ पुण्यधावलनैरा द्वः मसेषैरसुरैर्विव॥ ~~१५~~॥ सददं  
निनोः देविः व्याप्तलोचनयन्त्रिमा॥ पादात्पाततभुवः किरोरोः  
स्त्रिषितावरी॥ ~~१६~~॥ शोमिताशेषपातासीः धनुर्धनानिस्वनेवनाः  
॥ दिशोर्धुमसहस्रेषुः समीना व्याप्यस्थिता॥ ~~१७~~॥ ततः प्रवृत्तेः  
युद्धं तेषां देव्यासुरद्विधा॥ सहस्रास्त्रैर्वहुषासुरैरादिपिनादि  
गतरं॥ ~~१८~~॥ महिषासुरसेना

चामरश्चाशैश्चतुरपावलान्वित॥ ~~१९~~॥ तथा नागयुतेषां द्विहताः  
आरुक्वा महसुर॥ प्रवृद्धनाहता नाचसहस्रेणामहाहनु॥ ~~२०~~॥  
पंचाशीदंश्चनीयुतेः सिलोषामहसुर॥ प्रयुतानीसतेषां द्विर्धुसोः  
युयुधेरणे॥ ~~२१~~॥ गजवाजिसहस्रैर्वैरतेः केपरिहारित॥ हतारथा  
नाकोद्याचयुयुधेत्स्मीयुद्धत॥ ~~२२~~॥ विदालस्थो महोदेवः पञ्च  
आभिदरथायुते॥ युयुवेसयुगेतचरथानीपरिहारित॥ ~~२३~~॥ सः



शावर्णी

१५

अचतत्रा पुनश्चोरथ नागद्वेष्टता ॥ युयुधुर्षी पुनर्देव्याः सह न च  
महासुरा ॥ ४५ ॥ कोटिकोटिसहस्रेषु सुरधानी दृतिवीतथाः  
॥ हृषीकेशो वदतु तवैर्भूमि-महिषासुरा ॥ ४६ ॥ तामहेभिदिः  
पात्येव शक्तिभिर्मृत्युस्तथा ॥ युयुधुर्षी पुनर्देव्याः स्वर्गपरः  
सुपादिते ॥ ४७ ॥ केचिच्च शक्तिपुसकीः केचित्पात्नीस्तथापरे ॥  
देविष्वर्गप्रहारेस्तु ते ता हं प्रवचमु ॥ ४८ ॥ सा देवी ततस्तानि

राम

१५

संस्तुता गयप्राणिचरिदुक्ता ॥ जीर्णयेव प्रविशेदनिमग्नस्तत्रास्त्रवर्मिणी  
॥ ४९ ॥ प्रयायस्तावदादेविस्तु यमानासुराधिभिः ॥ पुनोवासुरदेव्यः  
सत्त्वाग्यस्त्राणि चैव चरि ॥ ५० ॥ सोपि कुण्डो धृतसद्यो देव्या वाहनः  
केसरी ॥ वक्रासुरसे मयुः वनेऽपि बहुताशन ॥ ५१ ॥ निव्यासा-मुः  
पुनर्वेशि च युधमानारणे धिका ॥ दृष्टवर्षं च संपुना गणाः सतहभ्र  
श ॥ ५२ ॥ युयुधुत्ते परशुभिर्भिरिडपा-गातिपादिते ॥ नासयतो सु



आवर्णी

१६

रगाणी.क्षेत्री.सुप.हहिना ॥ १३ ॥ अवा दयत परहा.जाणी.इत्यास्तः  
थापदे ॥ १४ ॥ नदगाश्च.तथैवा.येतस्मि.सु.दमरोक्तवे ॥ १५ ॥ ततो देवी  
त्रिमुलेन.गडपाश.कि.कृ.भि ॥ १६ ॥ स्वर्गादिभि.भु.सत.शो.नि.ज.था  
न.ह.सुरा.न ॥ १७ ॥ पातया.मा.स.वै.वा.मो.घु.रा.स्व.न.वि.मो.हि.ता.न ॥  
अ.सुरा.भु.वि.व्य.शे.रा.व.का.चा.मो.न.क.प.य.न ॥ १८ ॥ के.चि.डि.वा.स्तः  
आ.सी.क्षे.भ.ग.पा.ते.स्त.था.पर ॥ १९ ॥ के.चि.चि.प.ति.ता.भु.मो.नि.चा.सु.ले.न

सम  
१६

शे.२

चि.२

वक्षसि ॥ २० ॥ निर्.र.रा.स.रो.चे.रा.कृ.ता.के.चि.ड.गी.भि.दे ॥ २१ ॥ शै.वि.पो.धिः  
ना.नि.पा.ते.न.ग.द.पा.भु.वि.शे.र.ते ॥ २२ ॥ वे.भु.श्च.के.डु.धि.रि.सु.रा.ले.न.र.सि  
ह.ता ॥ २३ ॥ रा.ना.गु.का.रि.रा.प्रा.णी.भु.भु.वा.त्रि.र.सा.ई.ना ॥ २४ ॥ के.सी.चि.वा.ह.  
व.हि.चौ.हि.न.ग.वा.स्त.था.प.रे ॥ २५ ॥ मि.र.सि.वे.भु.र.ले.प.वा.म.ये.म.ध्ये.वि.वा.  
रि.ता ॥ २६ ॥ वि.हि.न.भै.वा.स्त.प.रे.पे.तु.र.व्या.म.डा.सुरा ॥ २७ ॥ ल.क.वा.कु.धि.  
च.र.गा.के.चि.दे.व्या.दि.धा.कृ.ता ॥ २८ ॥ वि.चै.पि.चा.ये.मि.र.सि.प.रि.



शिवगी

१०३

तापुन न्यरुता ॥ कलेधीयुयुधुर्देव्या गृहितपरमायुधा ॥ १०३ ॥ नर  
दुश्चापरेतवः पुकेनुर्यगयाथाता ॥ कवे-भाः ॥ चमिरशः वगर्गशस्त्र  
विपीनय ॥ १०४ ॥ तिष्ठतिष्ठतिभायैतोदेविमयेमहासुर ॥ पापिनेह  
थनागेश्वरसुरेश्वरः सुधरा ॥ १०५ ॥ अगम्यास्त्राभवेद्वयः यवभुसः  
महारता ॥ शोनितीघामदानघः शघस्तवचविमुभ्यु ॥ १०६ ॥ मधेवा  
सरसेमस्यः वारिस्वासुरवाजिगा ॥ क्षरोनैतमहाशैवः महासुरात्म

संम

१०७

तथामिका ॥ १०८ ॥ शिरोक्षयैरथावन्ति स्तरादा नुमहाचपे ॥  
शचमिरोमहालीह सुस्त्रजनधुतकेशर ॥ १०९ ॥ शरिरेभ्योमहारिः  
लीमशुनिवविचिन्वति ॥ देव्यागरोभ्रतेस्तचक्रतैयुधैरथासुरैः  
॥ ११० ॥ रथैर्वापुषुबुदेव्याः पुष्यवृष्टिमुचोरिभी ॥ १११ ॥ इति =  
आमार्कटोदयपुराणे शिवगीके सचंतरे देविमहात्म्ये महिषासु  
रशैववधोद्विषयाध्याय ॥ ११२ ॥ अथिद्वय ॥ निहयमानतत्सेय



शिवगी  
१८

वमलोऽयमहासुरा॥ जे नानिभिरक्षनकोपाऽप्ययो मो दुप घंभि  
का॥ १॥ शडेविरवर्धसर्वसमरेसुरा॥ तथा मेनुगिनेभृगोऽतो  
यवर्धसमो यर॥ २॥ तस्य भित्तिवारटो देवीः लीलये वशोत्करात्  
॥ अघानपुरगा-वानैर्यत्नानचैव वानिनी॥ ३॥ चिद्धे दन्धधनुः  
शयोऽत्रैव नानि स मुद्रितै॥ विव्याध चैव गात्रेषु चिन्नध-वानमासुः  
॥ ४॥ सैद्धि च ध-वा विरथो दत्तास्तो दत्तसारथी॥ अन्धधवरे

राम  
१८

रीडेविरवर्धवर्मधरो सुन॥ ५॥ सिंहमाहृत्य स्वर्धन-ति आधा नेताः  
सुर्धनी॥ ६॥ प्राजघा-भुजे सख्यो देवि सप्य निवेगवान॥ ७॥ तस्या स्वर्धुः  
भुर्जपाप्य पक्का लीन प नन्दन॥ ८॥ टटो यगा ह सुर्लसको पा दनेता लो-  
चन॥ ९॥ चिद्धे पञ्च-टटस्तु भ-डकाली महासुरा॥ आली ल्यमान-  
ते आभिः रविर्विवमिर्वी वारत॥ १०॥ दृष्ट्वा तदा यददुर्लः देवि शूल-  
मर्मुचतेत्॥ तदुत्तमसतधा तेताः नितस च महासुरा॥ ११॥ इतेन



शार्वांग

१५

स्मीः न जावीर्ये महीयस्य वसुपत्नी ॥ श्रीजमामगभारुः श्रीमरुः  
स्त्रिंशत्तर्कः ॥ १० ॥ शोपिशक्तिं मुमोवाथ देव्यास्तामत्रिकाडनी ॥  
ऊकाएभिर्हर्तुमोः पातया मासनिः प्रभौ ॥ ११ ॥ भंगनाशक्तिनिपः  
तिर्ताः इष्टाक्रोधसमाचत ॥ विदेवचामरः सुलवीलोत्तदपि साः  
दिनत् ॥ १२ ॥ टटः सिद्धः समुत्पत्य गमजो कुभातरेष्टिपत् ॥ लघुः  
युकेन सुयुधेते नो चेष्टि दशारिणी ॥ १३ ॥ युद्धमानो टटोत्तु

राम  
१५

रत्ना चागा महीगतौ ॥ युयुधाते तिस्रस्तुः प्रहनेरपि दारुणे ॥ १४ ॥ टटोः  
वेगाः समुत्पत्य निवत्य च नृगारिणी ॥ करप्रहारेण शिरश्चामरश्च पथः  
कुल्लत ॥ १५ ॥ इदमश्वरत्ने देव्याः शीला वृद्धादिभिर्हृत ॥ इतमुद्युतलः  
श्वेवः कललश्च निपातिता ॥ १६ ॥ देवि कुश्यागदापाते श्वर्ग्यामासः  
चोद्धत ॥ वा घृलीभिर्हि दुपात्ते नवा नेस्तामुः तथा धर्क ॥ १७ ॥ उग्रस्य  
सुग्नविष्यते तथैव च महादुर्ग ॥ विनेत्री श्वचिन्तुलेनी अद्यानपरमेश्वः



शावली  
२०

री॥१॥विजलस्याशिनाकावाःपानया मासर्वेशर॥५॥दुर्दुर्मः  
स्वीचेवभोसरेर्निन्मेमहाक्षय॥१॥एवंसंक्षीयमारोतुस्वमेमे  
महिषासुर॥महिषेणस्वस्तेपेणचासयामासतानागा॥२॥  
काश्चित्तुराडुप्रहारेणदुष्टदेयेस्तथापराज॥नादुलतादिता-  
ध्याःपानभृगाभीचविदारिता॥३॥वेगेनकाश्चिदपः  
रात्रादेनचमवेनच॥निश्वासपवनेतव्याःपानया मासर्वेशर॥

राम  
२०

॥१॥निपात्यप्रथानिकैःमभ्यधावतस्योसुर॥सिंहहृत्सुमहादे-  
याकोपञ्चेतथोस्विका॥२॥सोपिकोपाःमहाविर्यसुरा-  
णामहितल॥प्राज्ञाभीपर्वतांनुञ्चैचिद्वपञ्चननादच॥३॥  
धैर्यमगविधुराःमहितस्यवशीयन्त॥लागुलेनाहतचक्रि-  
त्पावयामासशर्वित॥४॥धुतर्लमेविनिचाश्चस्वरदुष्टदुष्टयु-  
क्तना॥स्वात्मानिगात्ताःशतसोऽनियतुनमसोचगा॥५॥हितिजो



शिवगी

२१

धस मा ध्या तः मा प तै तै म हा सु र ॥ दि ह्वा सा च रि ड का को पै त ध  
धा य त ह्यै क रो त् ॥ २० ॥ शा क्षि त्वा त स्य वे पा शी त व र्ध म हा सु  
रै ॥ तै न्ना भ मा हि र्ध र्प स्यो वि व द्वा म हा म्बे ॥ २१ ॥ त तः सि ह्म  
व त्स धो या व त् स्यी वि का शि र ॥ छि त्ति ता व त्पु रू षः त्व र्ध पा रि  
स्य त र ॥ २२ ॥ त त स वा सु पु रू षः दे वि चि द्दे द सा य फे ॥ तै  
त्व र्ध चि र्म ली सा र्ध त त सो मु म हा ग जै ॥ २३ ॥ क रै ता च म हा र्मि

राम

२१

ह त च क र्म भ ग र्ज च ॥ त्व र्ध त स्तु क रै दे वि र्ध न र्ध त त ॥ २४ ॥ त तो  
म हा सु रो भु यो मा हि र्ध न्व पु रा स्थि त ॥ त थै व चो भ या मा स चै लो के  
श च रा च रे ॥ २५ ॥ त तः कु ष्ठा भ ग त्मा ता च रि ड का पा न मु त्त मी ॥ य यो  
पु न स्तु न र्धै व य हा मा रु ता लो च नी ॥ २६ ॥ न न र्ध चा सु र शो पि व लः  
वि र्ध म ह्यै क त ॥ वि पा ना भ्यी च्चि द्दे प च रि ड का पु ति मु ध र न् ॥ २७ ॥  
शा च ना पु हि ता स्ते न च्चु र्ग प त्ति स रो क रै ॥ उ वा च त म दो दु र्ध मु ष



शावरी  
२२

सगःकुलसर्ग ॥ ३५ ॥ देवुवाच ॥ गर्जगर्ज च न सुतः मधुपावत्यि  
 वा म्यहं ॥ मया त्वपि हते तं च गर्जिव्यं तं सुदेवता ॥ ~~न विदुः वाच ॥ ३६ ॥~~  
 वेतुः कौसमुत्पत्य साकृता तं महासुरं ॥ पादेनाकम्प्य कैटेचः सुलेने  
 वसता नयत् ॥ ~~३७ ॥~~ ततः सोऽपि पदा क्रीडन्त यानि न सुखा ततः ॥  
 अर्द्धनिः क्रीडन्त वास्मे पुष्य मानो महासुर ॥ ~~३८ ॥~~ दद्यामहास्रवोदे  
 व्यासिरभ्युत्थानि पातित ॥ ततो हा हा हतं शर्च देत्ये शै येन नाः

सम  
२२

शमत् ॥ ~~३९ ॥~~ प्रहर्ष च परं यत्तु सकला देवता गगनी ॥ तेषु बुद्धी  
 शूरा देवि स ह देव्ये महर्षिभिः ॥ ~~४० ॥~~ यत्तु गर्ज च पत योऽनं च तु  
 इवा स्मरं गगनी ॥ ~~४१ ॥~~ इति शुभार्क रेडु यत्तु गगः शार्ङ्ग के मनः  
 तरे देवि महात्मैः महिषाशुरवधं चितियो ध्याय ॥ ३ ॥ अथिह  
 वाच ॥ टटः सुरगगनी शर्च देवा इन्द्रपुरो गसा ॥ स्तुतिमारेभिः ह कर्तु  
 निहते महिषासुरे ॥ ~~४२ ॥~~ अका ड्यत्तु सुरगगनी निहतेति विर्य तस्मि



शावरी

२३

तुलामपिसुखारिवलेचडेव्या॥ तातुसुबुः प्रणतिनशसि मोधरंशाः  
यागिमप्रहर्षधुजकोरुमचाहडेहा॥ २॥ डेवाडेचुः॥ डेवात्वया  
तनमिदं भगहामशस्तानिशेयदेवगणसन्निशमुहमुर्ता॥ तामः  
विकामखिलडेवमहर्षपुण्याभमानतामि विदधातुशुभानिस्तः  
॥ ३॥ यस्याप्रभावमतुलं भगवानरांतेबुलाहृष्टचेताहिवक्त्रवलः  
च॥ साचरिडकारिवलभगतपरिपालनायनाशापाचासुरभियस्य

हम

२३

मतिकेहेतु॥ १॥ पाश्वीस्वपैरुतिनां भवनेयलक्षिमः पापात्मनो कतिधिः  
वाहृदयेषुधुधि॥ खडासतोकुलजनप्रभवस्य लज्जतवानतास्यपरि  
पालयदेविविस्व॥ २॥ किंपर्णपामतवरूपमचिंतमेततकिंचातिधी  
यमसुरत्रयकारिभुरि॥ किंचाहृदयेषुचरितानितवाहुतानिसर्वेषुडेवः  
शूरडेवगणादिकेषु॥ ३॥ डेतुस्समस्तजगतांविगुणापि दोषैर्नला  
वनेहरिदादिभिस्यपारा॥ शर्वाभवाखिलमिदं भगदशभुतमध्या-



प्रताहिपरमापुष्कतिस्त्वमाद्या ॥ ७ ॥ पस्याः शमन्तसुरताशमुडीरणाः  
 नतप्रीप्रयातिशकलेषुमगेषुदेवि ॥ स्वादाशिबेध्यात्तुमिचतुप्रिहेतुः  
 रुद्रार्थसेत्तमतएवजनेत्तधाच ॥ ८ ॥ यामुक्तिहेतुरविचिन्त्यवृताः  
 चमभ्यस्यसेसुरनपतेऽपतोत्तारे ॥ मोक्षार्थमिमुनिभिरस्तशमः  
 त्तदोषेर्विद्याशिशोभगवतीपरमासिदेवि ॥ ९ ॥ शक्यमितिकास्तुः  
 विमलंगनयाविधातामुद्दितरस्यपदपाठवताचत्मासा ॥ देवित्रयी

राम  
 २४

भगवतिभवभावनापवाताचसर्वययतापरमार्तिहेति ॥ १० ॥ चित्केतः  
 भारिहृयेककृताविवासागौरित्वमेत्वरशिमेष्टतप्रतिष्ठा ॥ ११ ॥ दयः  
 सहासुममलपरिपुर्णचन्द्रविवातुकारिकः नकोतमकातिक्रान्तं ॥  
 अत्यद्भुतप्रहृतिमायुक्तातथापिबकं विलोक्यसहस्रामहिषासु  
 रैरा ॥ १२ ॥ दृष्ट्वातुदेविकुपितभक्तुदीकसलमुद्यच्छाकसह  
 शच्छविसन्नसद्य ॥ प्राणाभुमोचमहियस्तदतिवदिवैकेर्जिवते



शावली

२५

हिकुपितातकदसनेन ॥१३॥ देविप्रसिदपरमाभगवती भवाय  
सद्योविनाशयशिकोपपतेकुलानि ॥ विलातेमतदधुनेवयदत्ते  
नेतनीवलसुविपुलंमखासुरस्य ॥१४॥ तेस्मन्मनाभनपदेपुधः  
नानीतेषांतेपापसांशिनचसिदतिवधुवर्ग ॥ धन्यास्तएवनिभूः  
तात्मजमृत्युहारयेषासहान्मुदयदाभवेतीप्रसन्ना ॥१५॥ धर्मा  
रिदेविशकलानिस्तेदेवकर्मण्यनादृतः प्रतिदिनं सुकृतिकरोति

॥ स्वर्गप्रदातिचततोभवेतीप्रसादाथोफत्रेपिकत्तदाननुदेविते  
न ॥१६॥ दुर्गेस्मनाहरतिभित्तिमलेखजमुखस्थेस्मनामतिमतिः  
यशुभाददाति ॥ दारिद्र्यदुखभयहारणीकात्वदग्गासर्वोपकारक  
रगायसुभाविचिन्ता ॥१७॥ भिर्हर्तेजगदुपेसिस्तुवन्नधेतकु  
र्वतुनामनरकपरित्यज्य ॥ शोगाममृत्युमधिगम्यदिवंप्रयानु  
मतेमत्वेविभुनमदिताचिनिहंसिदेवि ॥१८॥ दृष्ट्वेवकिंचन



श्रीगुरु  
२६

वती प्रकरोति भस्म सर्वसुराणां विषुपत्प्रहिलोयि शस्त्रे ॥ लोका-  
योतुरिषयोपि हि शस्त्रं पुनर्हत्थं मतिर्भवति तेनैव दिते सुखादिः  
॥ १५ ॥ य इव भावनिष्कारविट्छुरोत्तथोग्रेः शुभाग्रकालिनि-  
वहेन दृशो सुखाणां ॥ पञ्चागताविलयमसुमदि सुखाणां यो ला-  
गेतवीललोकयतां तदेतत् ॥ २० ॥ दुर्वृतवृत्तशमनवदेविता-  
लोकयंतथेतदविचित्यमनुपममे ॥ विर्यवहृततद्देवपराक-

राम  
२६

मानावोरिषयि प्रकति ते तव दयात्यस्य ॥ २१ ॥ केनोपमानवेतुतस्य-  
पटकमस्य रूपम् शत्रुमयकार्यतिहारकम् ॥ विवेकपात्रमरनिष्ठः  
रताचदृष्टा त्वव्यवदेविवरभुवनपुरे देवि ॥ २२ ॥ वैलोक्यमेतदस्त्रि-  
लङ्घिषु नास्तेव चालो त्वपात्रमरमुर्धनितेपि दत्त्वा ॥ नितादिवरिषु ग-  
णा भवमप्यपात्रास्तस्मादृष्ट्वा हरिभवेन मजे ॥ २३ ॥ शुलेन पाहिनी दे-  
वि पाहित्व इन्मोक्षिके ॥ घृताश्वमेन न नयाहिः पापान् निरसनव-



शावली ॥ २४ ॥ प्राच्यां रघू प्रति चा चरितुं केरक्ष दक्षिते ॥ आ मणे ना वशुभ  
 २७ स्य उतर स्या तथे श्वरी ॥ २५ ॥ शो म्या निः आ निरु पा नी चेतो व्यधिः  
 चरिते ॥ यानि चा त्यंत धीरणी ते रक्षा त्मा त था शुभे ॥ २६ ॥ य ई  
 पा ॥ सु ल ग दा दी नी चा त्वा ति ते नि के ॥ पुर पद्मा व सं ग्रा नि ते रक्षा न र  
 क्ष सर्वदा ॥ २७ ॥ न यि र्वा च ॥ ए वं स्तु ता सु रे दे वीः कु सु मे र्न द  
 नो भवे ॥ सु र्दि ता अ ग ता धा वि त था ग धा तु ले प ने ॥ २८ ॥ भ क्ता

राम  
 २७

स म त्ते स्त्रि द शो दि यो ध्रु वे स्तु ध्रु व तां ॥ प्रा ह प्रजा द सु सु खी स मः  
 स्तो पु ता सु रा म ॥ २९ ॥ यदि सु वा च ॥ वि यं ता वि द ताः स र्वे वि द  
 त्मा नो नि वा धि ते ॥ त दा म्य ह म ति पि त्याः स्त वे र मि सु पु जि ता ॥ ३० ॥  
 क र्त व्य म प र प च्चे दु स्त्वर तं मि खे रं ता ॥ दे वा र्च सु ॥ भ ग व त्या  
 कृत स र्व न किं चि द व सि य ते ॥ ३१ ॥ य द वे सि ह ते स ह स्मा प्रे म हि  
 य शु र ॥ प दि चा पि व ते दे व स्त्व या स्मा कं म हे स्वरि ॥ ३२ ॥ स स्म रा



शावर्णी. सस्मृतात्वेति भवेथापरमापद ॥ यच्च सत्यं तत्र वेभेरे भित्त्याः स्तो  
 २६ स्यत्यमलानने ॥ ३३ ॥ तस्य वितर्द्धि विभवे कनकाटसाले पदिका ॥  
 वृद्धस्मात्पुसन्नात्वे भवेथासर्वदा मिव के ॥ ३४ ॥ मयि तवाच ॥ इ  
 ति पुसादिता देवेर्भगलोर्थे तथा पुन ॥ देवि देव सारिरेभ्यो नगचः  
 ॥ ३५ ॥ यद्विज्ञे विज्ञा ॥ पुनश्च गोपि देवाः ससमुद्रुता यथा भवत ॥ वधा  
 यदुष्ट देत्यानां तया शंभुनि सुम्भयो ॥ ३६ ॥ रघुनाय च तौकाः

राम  
 २६

गौ देवना सुपकारिणी ॥ तच्छुख मयुख्यातः तथा वक्तृ तथा मिते ॥ ३७ ॥  
 इति श्री मार्कण्डेयपुराणे शावर्णिके मन्त्रे देवि महात्मेशा का  
 दिस्तुति चतुर्थध्यायः ॥ ४ ॥ मयि तवाच ॥ पुनश्च भगि सुम्भा  
 भ्यामसुराभ्यां शनोपते ॥ त्रैलोक्यजगतां भागश्चेतामह दवजाश्रया  
 त ॥ ५ ॥ तावेव सूर्यातात दधकारं दधे दते ॥ कोवेर मथ चाम्य  
 च चकोते वरुणस्य च ॥ ६ ॥ तावेव पवनर्द्धि च चक्रुर्वदिक



श्रावणी

२९

मर्च ॥ ततो देवा विनिन्दुताः सुपराभ्या पराजित ॥ १ ॥ हतादि  
कारास्त्रिदं सास्ताभ्या सर्वे निराकृता ॥ महासुराभ्या तादृशैः  
सम्परित्य पराजिते ॥ ४ ॥ दयास्माकं वरोदतोः पथाद्यत्सु त्मः  
ताखिला ॥ भवेतां शशिष्यामिः तच्च नो परमापद ॥ ७ ॥ इति  
कृत्यामति देवाः हिमवत नगैस्वर ॥ नमुस्तत्र ततो देविः दः  
सुमाया पृष्ठपृष्ठ ॥ ६ ॥ देवदेवा ॥ नमो देव्यै महादेव्यै शिः

राम

२९

वाये सततं राम ॥ नमः पुष्कले भद्रये निवृताः पुनतात्मतार ॥ १ ॥  
रोद्रये नमो नित्याये गोव्ये धावि नमो नमः ॥ न्यास्ताये वन्द्युपिः  
रोये रव्याये वेदेवे नमो नमः ॥ ८ ॥ दुर्गाये दुर्गायै शारये सर्वः  
कारिण्य ॥ रव्याये तथैव कृष्णायै धुम्नाये सततं नमः ॥ ९ ॥ अः  
तिष्ठो म्यतिरोद्रये नतास्तस्यै नमो नमः ॥ नमो भगवत्यतिष्ठये देः  
वेकले नमो नमः ॥ १० ॥ यादेव सर्वभुतेषु विद्युमयैति शक्तिः



शिवरत्न ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ १॥ या देवि सर्वभू  
३० तेषु चेतन्ये त विधियते ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम  
॥ २॥ या देवी सर्वभूषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नम  
स्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ३॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपे  
षु संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ४॥  
या देवी सर्वभूतेषु धारुणेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै

राम  
३०

नमस्तस्यै नमो नम ॥ ५॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षारारूपेण संस्थि  
ता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ६॥ या देवी सर्व  
भूतेषु शक्तिरूपाण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै न  
मो नम ॥ ७॥ या देवी सर्वभूतेषु लघ्नारूपाण संस्थिता ॥ न  
मस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ८॥ या देवी सर्वभूतेषु  
क्षान्तिरूपेण संस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ९॥



आवली याडेवी सर्वभुतेषु यातिरूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नः  
 ३१ नमस्तस्ये नमो नम ॥ २० ॥ याडेवी सर्वभुतेषु लक्ष्मीरूपेण शस्थि-  
 ता ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम ॥ २१ ॥ याडेवी सर्वभु-  
 तेषु शान्तिरूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो  
 नम ॥ २२ ॥ याडेवी सर्वभुतेषु श्रद्धारूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये  
 नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम ॥ २३ ॥ याडेवी सर्वभुतेषु काविरू-

राम  
 ३१

पेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम ॥ २४ ॥ या-  
 डेवी सर्वभुतेषु लक्ष्मीरूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये न-  
 मस्तस्ये नमो नम ॥ २५ ॥ याडेवी सर्वभुतेषु क्षान्तिरूपेण शस्थिता  
 ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम ॥ २६ ॥ याडेवी सर्वभुतेषु  
 स्मृतिरूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमस्तस्ये नमो नम ॥  
 २७ ॥ याडेवी सर्वभुतेषु उदाररूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्ये न-



आर्याणी नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ २८ ॥ या देवी सर्वभुतेषु तृषिरूपेण  
 ३२ शस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ २९ ॥ या देवीः  
 सर्वभुतेषु तृषिरूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै न  
 मो नम ॥ ३० ॥ या देवी सर्वभुतेषु मेधा रूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्यै  
 नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ३१ ॥ या देवी सर्वभुतेषु मातृ रूपे  
 ण शस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ३२ ॥

३२

या देवी सर्वभुतेषु कातरूपेण शस्थिता ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो  
 नमस्तस्यै नमो नम ॥ ३३ ॥ या देवी सर्वभुतेषु कातरूपेण शस्थिता  
 ॥ नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो ॥ ३४ ॥ इति वाणा मविष्ठाः  
 त्रिभुता मां मस्तिस्तेषु या ॥ भुतेषु सतततस्यै व्यासे देवे नमो नम ॥ ३५ ॥  
 चित्रिरूपेण या क्लृप्तमेतन्मया शस्थिता न गत ॥ नमस्तस्यै नमस्त  
 स्यै नमस्तस्यै नमो नम ॥ ३६ ॥ सुतासुरैर्पुर्वमनिष्ठशंभया तः



शावली थासुरे ३३ ॥ रादिने शुशेविनाकरोतिसावः शुभदेतुः रिस्वरी ॥ ३३ ॥  
 शुभाण्यभडाभिहृत्तुचापद ॥ यासासुतभवदुतदेत्यचापदेरस्याः  
 भिराचसुनमस्यते ॥ ३४ ॥ याचस्यतातक्षरामेवहृत्तीतस्यदप  
 दाभक्तिविनमुमुर्निभि ॥ साविस्वाच ॥ एवसवाभिपुक्तानादे  
 वानातचपावती ॥ ३५ ॥ सातुमभ्याययोनीयेभेभाः शुभाचपनः  
 यनं ॥ सापवीनासुतसर्वभवन्दिः स्तुपतेचका ॥ ३६ ॥ शः

राम  
 ३३

निराः २

रिहकोशतश्चास्यास्समुभताववादिवा ॥ स्त्रोत्रममेत्वक्तियते शुभा  
 देत्यहृते ॥ ३७ ॥ देवेस्समस्तेस्समरेदिशुम्भनमराभिते ॥ शसिर  
 कोसतस्याधार्ध्यानिस्तता स्वीका ॥ ३८ ॥ केसिकीर्तिसमस्ते  
 सुतनोलोकेषुगीयते ॥ तस्यान्विधिर्गतापात्रुहृदनाभुत्साधिपार्च  
 ती ॥ ३९ ॥ कालिकेतीसमाख्याताहिमाञ्चलकृताभ्रया ॥ ततोमि  
 काम्यरूपमिष्टानासुरमनोहरं ॥ ४० ॥ ६६ शिचरेणपुरादश्चः



शारंगी

३४

भूतेषु सुखानि सुखयो ॥ तस्या सुखोपवाया ता-भ्रसिव सुमने  
 हरे ॥ ॥ कायस्ते स्त्री महाराज भासयती हि माचले ॥ नैव ताः  
 दक्षा च दुपदुषके न चिंमधावे ॥ ॥ तां कस्यस्यो देवी गृह्य-भ्रा  
 सुरेस्वर ॥ स्त्रीरन्तमति चार्द्धा द्योतपती दिसस्त्रिषा ॥ ॥  
 सा तुतिष्ठति देवदेवी मुवा द्युमर्हती ॥ यानिरन्तानि मनयो-ज  
 गभ्रादि वैपुषो ॥ ॥ वैलो व्यति समस्तानि सासुत चाति ते ग

ताः ३

राम  
३४

हे ॥ ऐरावत स्तमाणीतोः गजरत्न पुरंदरात् ॥ ॥ पारिजात तत्तु इव  
 यतथैवोञ्जै श्रवाहय ॥ विमान हंसस्य युक्तं मत्ततिष्ठति ते-धे ॥ ॥  
 रत्नभुतमिहानितयदासिद्धे वसेभुते ॥ निधिरेव मया पद्म समानितो  
 धने सोरात् ॥ ॥ किञ्चिन्निददौ गृहिर्माला मत्पानपद्मजा ॥ हवे  
 ते वारुणा दोहं काञ्चनश्चावतिष्ठती ॥ ॥ तथा प्रस्य नयनेः पुरा  
 सिद्ध जायते ॥ नृत्यो रुकाति दाना मत्सक्तिरीशमायाहता ॥ ॥



शिवगी  
३५

वासस्तगिले मी ए अस्य भ्रातृजव परिगृहे ॥ नि सुम्भश्चाधिजाताश्च सः  
मत्तार न यातय ॥ ५४ ॥ वहिरपि देदो तुभ्य मग्नसौ चेय वाससी ॥ एवं  
देत्ये इर नानी स मत्ता न्या हुता निते ॥ ५५ ॥ म्त्रि र न मे मा कल्पाणी  
त्वया कस्मात्त गृहेते ॥ ५६ ॥ नि सुम्भेति वच सुम्भ सतदा च  
एतु मुग्धयो ॥ ५७ ॥ प्रेषया मा स सुग्रीवः सुत देव्या महासुर ॥ ५८ ॥  
ति चेति च वक्तव्या सागत्या वचना नमः ॥ ५९ ॥ यथा वा मेति सर्वः

राम  
३५

तः २

या तथा कार्य त्वया लघु ॥ ६० ॥ सत व गत्या य चास्तसे लो दे  
शेति शोभने ॥ ६१ ॥ तीक्ष्ण देवी तत आर्ह शब्दं धुरवा गिरा ॥ दुःसा  
वा च ॥ देवी देत्ये स्वर सुम्भ वे लोक्य पर मे स्वर ॥ ६२ ॥ दुतो ह प्रेषि  
ता त्वेन त्वत्स काश महे श्वर ॥ प्रव्या हुता जयास्तर्वा सुसर्व दारु देव  
यो निष्ठु ॥ ६३ ॥ निजिता वल देत्या नि सयदा हं ररुग्ध तत् ॥ म  
म वे लोक्य मयिल म म देवा वसा नुगा ॥ ६४ ॥ जला गा न हं सर्वा



शाकरी ३ पाभ्रासिपथकथक ॥ वैलोक्यवनरत्नानि ममवस्था न्यसेषतः  
 ३६ ॥ ~~६३~~ ॥ तथैव गजरत्नसुहृत्वादेव्ये उवाहनं ॥ क्षिप्तो दमथ नो  
 भुते मश्वरत्न ममा मरे ॥ ~~६४~~ ॥ उचैश्च सवसतस्तु प्रनिपत्य समः  
 पितर ॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषु रक्षेषु च ॥ ~~६५~~ ॥ रत्नभुताः  
 निभुतानि तानि मय्येव सौ भव्यं ॥ स्त्रीरत्न मे भुता देवी लोक्य मया व  
 द्देवयम् ॥ ~~६६~~ ॥ सातो मस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयं ॥ मास्वाः

राम  
 ३६

ता. २

ममानुजत्वापि निस्तुम्भसुखविजय ॥ ~~६७~~ ॥ मजतोभ्रसोलापाङ्गी  
 रत्नभुसि वैयप्रत ॥ परमैस्त्वर्यमतुलं स्यास्य ममत्यरिग्रहात् ॥ ~~६८~~ ॥  
 हतकुब्जासमा लोक्य मत्यरिग्रहतीक्ष्ण ॥ ~~६९~~ ॥ ~~सावित्र्या च~~ ॥ हृत्पुष्पाः  
 सा तदा देवी गन्धिरातः स्मिता जगो ॥ ~~७०~~ ॥ दुर्गा भगवति भद्राय  
 येऽन्धार्यते जगत् ॥ ~~७१~~ ॥ सत्यमुक्तत्वथानात्र मिथ्या किञ्चि  
 त्वयोदितम् ॥ ~~७२~~ ॥ वैलोक्याधिपति शुभोऽस्माश्च पिता ह्यस्य ॥  
 निशुः



शिवेणी किं त्वं च यत्प्रतिलान मिथ्यातत्कीयते कथम् ॥ १०० ॥ श्रुयनामस्य  
 ३८ बुद्धिश्चात्प्रतिलायाः कृतापुनः ॥ योमानयन्निशुद्धमेः योमेदं प्यवेये हि  
 ती ॥ १०१ ॥ योमेत्युतिबलो लोकाः समेभर्ता भविष्यती ॥ तदागच्छतु  
 सुम्भो वनि सुम्भो वा महसुर ॥ १०२ ॥ माञ्जि चाकिञ्चिदेतन्नात्र पाणि  
 ईकातुमेतद्यु ॥ १०३ ॥ ॥ भवतिज्ञास्तिमेव त्वदेवि प्रहममात्र  
 त ॥ १०४ ॥ चेतोकास्तस्मिन्मस्तिरेः दग्ने सुम्भनि सुम्भयो ॥ श्रमे

राम  
 ३८

वामपिदेत्यानाः सर्वे देवाणां योयुधी ॥ १०५ ॥ टिष्टंति सन्मुखे दे  
 वीः किमु न स्त्री च मे किं का ॥ ईश्याः सत्ता देवास्तस्युपयानसम्पु  
 ते ॥ १०६ ॥ सुम्भादीनां कथं तेयाः स्त्रिप्रपात्यसीनसुखम् ॥ साः  
 च हृष्टमयवोक्ताः पार्श्वसुम्भनि सुम्भयो ॥ १०७ ॥ कस्ता कर्षणा  
 निर्द्धतः गोहवागागमिष्यसि ॥ देवुवा ॥ ॥ एवमेतकुञ्जं सुम्भनि सुः  
 स्मश्चातिवीर्यवार ॥ १०८ ॥ ॥ किञ्चिदेमिप्रतिला मे वदनालोचि



शावरी तापुरा ॥ सत्वर्जं च मयि कृतं तं युदेत सर्वमाहुत ॥ ~~तदा च~~  
 ३८ वचासुरे जाय सचयुक्तं केरोतुवम् ॥ ~~तदा च~~ ॥ इति धा मा कः  
 तेषु यपुराणे शावरी के मने तरे देविम हाते दुत शं भा दु पंच  
 मध्याय ॥ ५ ॥ ~~अथि त्वा न~~ ॥ दुत्या क र्ण व सो दे व्या य स दु तो म र्ष पु  
 हीत् ॥ श मा न म स मा ग म्यु दे त्या रा जा पं वित्त रात् ॥ ~~तस्य~~ ॥ तस्य दु त स्य न  
 द्या क्यः मा क र्ण य स र ए हुत ॥ सं को ध व प्रा ह दे त्या ना म धि पं धुं य लो

राम  
 ३८

चमे ॥ २ ॥ हे धुं मु लो च सं भु त्वा स त्रे य प रि वा रि त ॥ ता मा न य व ला दु व्या  
 के सा क र्ण रा वि क ला म् ॥ ३ ॥ त त्प रि वा रा द श्चु भि द्वा दि चो ति कृ ते प  
 र ॥ स ह त यो म हो वा पि स के ग न्ध र्ण व च ॥ ४ ॥ ~~अथि त्वा न~~ ॥ ते ना  
 स म स्त त स्सी धुं स दे त्यो धुं मु लो च न ॥ धृ तः ष ष्ठा सह आ ना म सु रा  
 गा धु लो य यो ॥ ५ ॥ श द्ध वा ष्वा ला त लो दे वी तु हि मा च र ग स स्मि ता  
 र ॥ रा गा हो र्ने प या दी ति मु लो सु म्भ नि सु म्भ यो ॥ ६ ॥ न चे त्यी त्या



शावरी

३५

यमवति मन्दतार प्रवेष्ट्यामि ॥ ततो वला-मामेव केला कर्षण विहः  
लोम ॥ १ ॥ देवुवाच ॥ देव्यश्चरेण प्रहितो बलावा चाल संकते ॥  
बला तयसि मामेव तत कि ते कते कते म्महम् ॥ २ ॥ आधुवाच ॥  
इत्युक्तस्सा भ्यधाय तामसुरं धु-मुलोचन ॥ हंकारे नेव त-भस्मसाच  
काराविकातते ॥ ३ ॥ अपेक्षुध न हसे च मसुराणां तथा चिक्क  
॥ ववर्षसाय केसि क्षणेन तथा सक्ति परस्वधे ॥ ४ ॥ ततो धु तस्य दः

राम

३५

कोपात्कुत्वा नाहं सुभै रवर ॥ पपाता सुरस्ये नाया सि हो देव्याश्च वाह  
न ॥ ५ ॥ काश्चित्कर प्रहने स्तुता देव्या नासेता चापतम् ॥ आक्रम्यः  
चाधरेणा-या वस नवा-महा सुतान ॥ ६ ॥ केवाञ्चित्पाटया माल नः  
ये कोयानि केसरि ॥ तथा तत्तु प्रहरेणा सितं शि क्षतवा-मृधक ॥  
॥ ७ ॥ विधि च वाह शिरस क्षतास्ते न तथा परे ॥ पपौ च कधि  
व्यादयवा धु-मवेत्तार ॥ ८ ॥ सुयेता तदल सधे चापनि



शावलि हात्मना ॥ तेन केसरिणा देव्या वाहने नानि कोपिन ॥ १५ ॥ त्वीतमनु  
 ४० देव्या निहन्धु-मुलो चराम ॥ वलचक्षुषितकृतन देविकेसरिणा  
 तवे ॥ १६ ॥ पुनः कोप देव्याधिपति सुभयसुहृताधर ॥ शुभापवा  
 मासचेतो चरुसुहृता महासुहृते ॥ १७ ॥ हे चरुसुहृदवलो वं नमिप  
 रिधारितो ॥ तवेगछतगत्वा च सास्यमानिपलात ॥ १८ ॥ वलोखा  
 कृष्यवद्यावायहिवस्सशयोपुधी ॥ ततस्येव्यासुधैसर्वैरुनेर्वि-

राम

४०

निहन्धुता ॥ १९ ॥ तस्या हनायादुव्यायासि हे चकिरापानते ॥ शीघ्र  
 मागम्यताव धागृहित्वा तामयाविका ॥ २० ॥ इति आमाकृष्टदेयः पुनः  
 तोऽगावलिजेमनत देवितहात्मै धु-मुलो चराः वधस्वेष मध्यायः  
 ॥ २१ ॥ अथिरुवाच ॥ अत्र प्राप्ते ततो देव्या चरुसुहृदपुगमा ॥ चतुरंगी  
 वलोपेता यद्युभयतायुधा ॥ २२ ॥ दृष्टुमेततो देवीमिषधासा व्यवस्थि  
 तान् ॥ सिंहस्यापारुशोले आरुगे हंति काञ्चला ॥ २३ ॥ ते दृष्टवातासः



शावरी

४९

मादातुमुद्यमचक्रमुद्यता ॥ शकृदमः चापासिधरात्तथायेतत्समी  
पगा ॥ ३ ॥ ततस्कोपश्चकारोच्चैरविकानानरिश्चती ॥ कोपेतचा  
त्यवडनः सपिवर्गसमुत्तदा ॥ ४ ॥ भुक्तुर्तिकुतिलात्रव्याः ललाटक  
लकाद्रुतम् ॥ कालिकलवदनाः विनीकृतातिपासिणी ॥ ५ ॥  
विचित्रः खड्गधराः एतन्माताविः सुवर्ण ॥ दीपिचर्मपरिधारासु  
ठकमाजातिभैरवम् ॥ ६ ॥ अतिविक्तावदनाः चिकललनभुः

रस  
४९

॥ ७ ॥ ४

विता ॥ निमग्नाः रक्तपनाः एतादपुरितदीगुह्या ॥ ७ ॥ साव्यगाः  
नाभिः पतिनाघाटपतिमहासुहृन् ॥ शैवेतत्रसुहृदीणाः सभक्षपः  
ततदलम् ॥ ८ ॥ पार्श्विग्नहोमोहिः योऽवतसमत्तितान् ॥ समा  
जायेकहस्तेताः मुख्यविश्वपवारुणा ॥ तथैवयोऽतुर्गैरथसा  
रथिभासह ॥ निक्षिप्यवकेदसने शर्ववसत्यतिभैरवम् ॥ ९ ॥ ए  
वंजग्नाः केसेषुः ग्रीवायासथचाः परम् ॥ पाण्डेनाक्रम्यचेवायः



शिवली  
४२

सुरसा-यमयोधयत् ॥ १२ ॥ तैर्मुक्ता निचशस्त्राणि महास्त्राणि तथाः  
सुरे ॥ सुखेन जगता हसुया दत्तनैर्मुथिता यदि ॥ १३ ॥ वलिना तत्  
लसर्व मसुरा नादारात्मना ॥ ममदी भक्षयश्चाप्या नयाश्चो तादयः  
तदा ॥ १४ ॥ प्रसिना निहता केचि केचित्खं व्याकुतादिता ॥ जगु-  
र्विनाल मसुरा दत्ताग्नाभिहतास्तथा ॥ १५ ॥ क्षरो न तदलसर्वः  
मसुराणा निपातितम् ॥ दयसा च जो भादुडा वता कालिमतिनिषः

रम  
४२

राम ॥ १६ ॥ सनवर्षेर्महाभिमे भिमाक्षता महासुर ॥ छादयामा  
सचकेश्व सुराडिह प्रेस्सहभ्रश ॥ १७ ॥ तानि चकारण निकाटी वि-  
सवाणी तसुखम् ॥ वभूर्यथा धु विवाणी सुकुनि धनोदरम् ॥ १८ ॥  
ततो महासातिरुया भिमभैरव गारुडीनी ॥ कालिक करालवजाते  
दुर्दश दमरुणेष्टला ॥ १९ ॥ उत्थाय च महाभिनेह देविचराड मधा-  
वत ॥ गृह्णन् चाल्य केसेषु शिरस्ते गालिनाछिनत् ॥ २० ॥ छिः



शावरी  
४३

चेसिरशिहेयेडश्चकेनादन्नुभैरवर॥लेनणादेनहतावाखयतैः  
भुवैरयती॥२०॥प्रथमुजोभ्यधावतादृष्ट्याचउनिपातिर॥८  
मय्यपातयन्नुमोखत्वाज्ञाभिहतादृष्ट्या॥२१॥हतेसद्यततस्तेये  
दृष्टाचराडुनिपातितर॥मुण्डवसुर्महाविर्यदिसोभेजेमहातुरम्  
॥२२॥शिरश्चऽस्यकालिचगरहित्वामुण्डमेवच॥जाहपुचेराडा  
दृष्टासमिश्रमभ्येत्यचराडीका॥२३॥मयातवाचोपहृतोचराडु

राम  
४३

मुण्डोमहापुरु॥युद्धेयलेखयेन्नुन्नुनिसुम्भचहनिष्पत्ति॥२४॥  
अधिरुवाच॥तावानितोदृष्टोदृष्ट्याचराडुमुण्डोमहासुरो॥३॥अच  
कालिकपानितलितश्चराडुकावच॥२५॥मस्माचराडुचमुण्डचे  
गरहित्वाचमुपागता॥चोडेमाततोलोकेख्यतादेवीभवितव्य  
शीर्ष॥२६॥इतिथीमार्कण्डेयपुराणेशावरीकेमनत्रेदेविः  
महात्मेचराडुमुण्डवधेनैमसाधाय॥२७॥अधिरुवाच॥



शारंगी चलेच निहते देव मुरोडुच विनिजातते ॥ वरुलेषु च सेनेषु ध्रुः  
 ४४ यितेते सुरेस्वरं ॥ १॥ १६ कोपपराधिनचेताः सुम्भप्रतीपवान् ॥  
 उद्योगसर्वसेयाणां देत्यानामादिदेसह ॥ २॥ सुद्युसर्ववलेः  
 देत्याः स्वराडसि निरुदायुधा ॥ कथुनाश्च तुरासिमी नीर्यातुस्वः  
 वलेष्टता ॥ ३॥ कोतिविव्यासि पञ्चाश उरुराणां कुलानि वै ॥ स  
 ते कुलानि धीमताः निर्गच्छन्तु समालया ॥ ४॥ कालिकाडोहताः

४४  
 ४४

मोर्षी कालीकेयातथासुरा ॥ दुःकायस आनिर्यातुः श्रीलयाहिताममः  
 ॥ ५॥ इत्यालापासुरपतिः शुभो भैरवसास न ॥ ६॥ विर्जगा महासेनेः  
 लहसेने वरुनिष्टता ॥ ७॥ त्रयाता चरिडुकातसेन मिनिभिष्टनम्  
 ॥ ८॥ आलोने स्वेरपासास धरणी गगनातनम् ॥ ९॥ ततश्चिह्नोमः  
 हा नादमगिचकृतवाचप ॥ घटाश्च नेन रं नाड मन्त्रिका चोपदाः  
 हत ॥ १०॥ धनुर्धरासि हं घटा नाणा हापुरित दिक्षुषा ॥ मीनाः



देवीविरो लज्जितिविस्तारिता ॥ ७ ॥ रत्नीनादमुपभ्रुत्य डैः  
 त्यस्यैव यश्च सुहृत्सु ॥ ८ ॥ डैविशिंहस्त्रि ताकातीः स्वरोर्वैद्यारिवाहाः  
 ता ॥ ९ ॥ एतस्मिन्नेतरेभ्यः विनासायसुराब्दवा ॥ भवायामरः  
 सिंहार्यरामतिथिवत्तामिवा ॥ ११ ॥ बुद्धिसगुहविष्णुनः तथैवस्य  
 चसत्त्वय ॥ सरित्स्थो विनिष्कृम्य तदुपे चरितुं काययु ॥ १२ ॥ प  
 त्यडेवस्य यदयं यथा भुषणवाहनम् ॥ तदेदेव हितं कृत्ति

राम  
 ४५

रसुराण्योऽमुमाययो ॥ १३ ॥ हरायुक्तिविमानाग्ने साधुसुचकमराडु ॥  
 प्रायानावसराशरितुर्वत्ताणीसाभिधीयते ॥ १४ ॥ महिस्वरि वृषाक्षः  
 त्रिसुतः वरधारिनी ॥ महाही वलयाप्राप्ता च उरेयाविभुषना ॥ १५ ॥  
 कोमारिः शक्तिहस्ताचः मयुरः परवाहण ॥ योऽमुमभ्याययोऽंताः नमि  
 कागुहकपिराणी ॥ १६ ॥ तथैव वेत्सवी सक्तिः गिरुडो परिसिद्धता ॥  
 सत्त्वैव च कः गडा शारः स्वर्गहस्ता भुषाययो ॥ १७ ॥ यलवारहमनुः



मोक्षार्थं (गो) रूपया विभ्रतो हने ॥ शक्तिस्सा प्या यपो ट व वाहि हि विभ्रतित नु मः  
 २६ ॥ १८ ॥ नाहं सिंहासि हस्यः विभ्रतिस दृशं वपु ॥ प्राप्ता त च संरा धीः  
 पति प्र नम्र व सं हती ॥ १९ ॥ व प्र हस्ता दथा वै डी ग जल जो परिः  
 स्थिता ॥ प्राप्ता श हस्य नयनाः यथा श क्त क्ष धै वसा ॥ २० ॥ त त ध्यारि  
 ह वा स्तभिः रि सा नो देव शक्ति मी ॥ ह य न्ना म सु रा नि धुः म म प्री त्या  
 ह च रि उ का र ॥ २१ ॥ त तो डे वि सरि ना तुः विष्णु का ना ति भि व र्णा  
 मि

राम  
 २६

॥ च रि उ का शक्ति र लु म्ना शि वा स त नी ना डि नी ॥ २२ ॥ सा वा ह धुः  
 मु ज ति ल मि सा ह म प रा मि ना ॥ इ त त्व दु ष्च भ ग वः पार्त्वि शु भ्मः  
 नि सु भ्म यो ॥ २३ ॥ ब्रु हि सु भ्म नि सु भ्म च दान वा वी त ग र्घि ते ॥ मे  
 चा न्ना य दान वा वी च सु क्षाय समु प रि द्र ता ॥ २४ ॥ वै लो क्य मी श्रो  
 ज म ताः डे वा स्तं तु ह वि भ्रु ज ॥ मु य प्रा पा त पा ना तः यदि जी व तु मि द  
 र ॥ २५ ॥ वे ला व ले द्या द थ वे भू व नो पु च का क्षि रा ॥ त रा ग ष्ठः



शावली तु रथं मन्त्रिणां शितेन वा ॥ २० ॥ ~~यथा~~ ॥ वना निरुद्धो दे  
 ४७ त्येनः तेषां देव्याः सिवस्वयम् ॥ इति ह्युति तिलोके इस्मिन् ततसाः स्यान्ति  
 प्रागता ॥ २१ ॥ तेषां भुक्त्वा वचो देव्याः सर्वाभ्यां महासुरा ॥ अमर्षाः पु  
 रिता भग्नुः यत्र कात्यायनि स्थिता ॥ २२ ॥ ततः पथममेवाग्नेः शरशक्ता  
 ष्टि दारिभी ॥ ववर्षुर्हृदतामर्षाः तां देवि मम हारय ॥ २३ ॥ सा च ता  
 सुहिता शरणाः सुलशक्ति सुश्रधार ॥ चिच्छेदलीलायां भातधः

राम  
 ४७

नुमुक्तैर्महेषुभिः ॥ २४ ॥ तस्याग्रातः तथा काली सुलपात विदारितान्  
 ॥ स्वव्याघ्रयोधिनश्चारिः कुर्वताञ्च चरंतदा ॥ २५ ॥ कमरात्तु जला  
 क्षेपः हतवीर्याणां हतो गम् ॥ बालनी चाकरोच्चुः येन येन स्मृत  
 वती ॥ २६ ॥ महेश्वरी विशुलेन तथा चक्रेण वेदनेन ॥ देवाः सर्वा  
 एको मारि तथा शक्त्यति कोपना ॥ २७ ॥ ऐङ्गीकुलि शपातेण स  
 त मोदेत्यदनेन वा ॥ पेतुर्विदारिता पृथग्वां स्तुधरोषप्रवर्षिणा ॥ २८ ॥



शिवगी तुगउप्रहारविधस्ता दव्यागत्रु तवधन ॥ बाराहमुर्गा उपतरचेके  
 ४८ लाच विदारिता ॥ ३५ ॥ नस्वेर्विदारितास्वा-याभे धोयन्नि महासुर  
 र ॥ एतस्मिंही च चारा जौ नदापुरितः दि द्भुत्वा ॥ ३६ ॥ चराह  
 हासेरश्रुताः शरीवदु न्य भिद्विना ॥ पेतुपिथिध्या म्यतिताः श्वत्वा  
 दाधत्ता नदा ॥ ३७ ॥ इति माचगणा कु दमदियते महासुरा र ॥ ३८  
 द्वाभु पापेर्विविधे चै सु देवा रिते न्यका ॥ ३९ ॥ पलाय मला नृ

राम  
 ४८

द्वाः देवा मातृ गणादिता र ॥ युधु मभ्या ययो कु क्षाः रक्तविजो महा  
 सुर ॥ ४० ॥ रक्तवि द्यु र्पादभुमो पतत्यस्य शरिरत ॥ शमुत्पत्ति मे  
 दिव्या तत्प्रकारो महासुर ॥ ४१ ॥ युयुधे शगदापाणिः रितुशक्त  
 महासुर ॥ ततश्चै-दी स्ववशेण रक्तवीज माता उपत् ॥ ४२ ॥ युलि  
 श्पेनाहतस्यासुः वरु सुश्रा वणेणितम् ॥ शमुत्पत्तु ततोयो कास्त  
 दुपाय पटा क्रमा ॥ ४३ ॥ यावत् स्यतितास्तस्या शरिरा वक्तवि-दव ॥



शावरी राव टय्युरुवा जा टः वदीर्य वलविक्रमा ॥ ३ ॥ टेचाति युयुधुवः  
 ४७ पुष्टारक्त सन्धवा ॥ शप्रमात्तरि न्युगः शसुपातातिभिषणाम् ॥ ४ ॥  
 पुष्टाश्चवध पातेनः क्षुत मय्याशि रोपदा ॥ वेवाह रक्त पुरुषाः स्ततोः  
 जाता शहभ्रश ॥ ५ ॥ वेस्तवी सपरेण वे च केनाभि जधाहनम् ॥ ग  
 दाया तादयामाशः चटाडी तम सुटे श्वरम् ॥ ६ ॥ वेस्तवी चक्रभिन्नः  
 स्य रुधी रश्नाव शम्भवे ॥ शहरो सो अगदव्या तत्प्रमाणे महसुरे

राम  
 ४७

॥ ७ ॥ शक्त्या जवा-कोमरि चारही च तथासिनी ॥ माहेस्वरि वीसुले  
 रा रक्तवीज महसुरम् ॥ ८ ॥ शचाधि गदया देताः स्तथाष्टवाहनम्  
 थक् ॥ मादृक्को पलमावयोः रक्तवीजो महसुरम् ॥ ९ ॥ रस्याः हतसे  
 वञ्छाः शक्ति सुलादिभिभुवि ॥ पपातयो वै रक्तोतः स्तेना स च सो सुता ॥  
 ॥ १० ॥ रेशा सुता रा स्रक्से भुते रसुरे स्सकल जगत् ॥ व्याप्तमासीत्  
 गो देवाः भयमाभगु रुतमम् ॥ ११ ॥ ताचिषणा सुताः चटाडीः



शार्ङ्गि काप्रहसचर॥ उवाच कालि चामुखेः विस्तरे वदनं कुरु॥ ५० ॥ गः  
 ५० च्छत्रपातस्य भुता रक्तविः तु महासुतं च॥ रक्तविलोपुति च चः  
 वक्त्रेणानेन योगिना॥ ५१ ॥ भक्षयति चरुणो तद्वत्पञ्चात्महासुतं च॥ रः  
 वसेष क्षययेत्याः श्रीगणेशो ममिधुती॥ ५२ ॥ भक्षयमानां त्वयो वीः  
 गाः न चोत्स्यन्ति चापरे॥ ५३ ॥ हस्तुक्ता ता मतो देवी सुलोना ह  
 मद्यानतम॥ ५४ ॥ सुखेन कालि जगृहेः रक्तवी भक्षय शानिताम्॥ ततोऽप्यः

रस  
५०

वा नवा माधवः ॥ चरितुका ॥ ॥ न चास्यावेदनाम्बु केः गडापाः  
 तोलिका मपि ॥ पाद तस्य देहात् वरु सुभ्रावतो गिरि म् ॥ ॥ प  
 तस्त पस्तक केला चामुंदा सप्रतिष्ठति ॥ मुख्ये स मुदतायेत्याः र क  
 पाता म्हासुता ॥ ॥ टाश्च द्वा दध चा मुताः पपे तस्य च शोभि  
 तम् ॥ देवि सुलेन व ज्ञेया चोरो रस्मिर्भिन्नैः ॥ ॥ नवान ह नवीन  
 ते चा मुता पीत शोभितम् ॥ स्वपात महि पयेः शत्रु सं वस ना हतः ॥



शावली ॥ ६० ॥ नीरुक् श्वमः हिवालो रक्तवीजो महसुर ॥ ६१ ॥ हृदये हर्षमनुते मवा  
 ५१ हृदये हर्षमनुते मवा ॥ ६१ ॥ तेया मातृगणोपतो ननर्जी नृशुदेवत ॥ ६२ ॥  
 इति श्रीमद्भक्तिसुतेयपुराणे शावलीके सप्ततरे देविमहात्म्ये रक्त  
 वीजवधे अष्टमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥ अथिरुवाच ॥ विचित्रमिदमाख्या  
 न भगवन्भवतामस ॥ देवाश्च रितमाहात्म्यं रक्तविजेलिपातने ॥ ६४ ॥  
 चकार सुमो ॥ ६५ ॥ निसुम्भश्चोत्रि कोपना ॥ अथिरुवाच ॥ चः

राम  
 ५१

कोपमनुते रक्तविजो निपातते ॥ ६६ ॥ शुम्भासुरो निसुम्भश्च हः  
 तेव नृशुचाहवे ॥ ६७ ॥ नृपमानं महात्म्ये विलोक्या मर्षमुकर ॥ ६८ ॥  
 अभधावन्निःसुम्भोत्थः सुव्यापासुरसेनपा ॥ ६९ ॥ रस्यान् रस्तथापदये  
 पार्श्वयोश्च महसुर ॥ ७० ॥ शरुषोषपुष्पाकुवा हस्तुदेवी मुपाय  
 यु ॥ श्रीभगवन् महाविषयः शुम्भो यश्च वने हृत ॥ ७१ ॥ मिह हस्तु चरित  
 कोकोपाः कृत्यायुधं नृपात्तनी ॥ ततो युधमतिवाशि देवाश्च



शिवरक्षा भूतिसुम्भयो ॥ ६ ॥ सरवर्षमतिवोगः मेखवोरिववर्षतो ॥ चिच्छे  
 ५२ दध्याम्भः रक्षाभ्याम्भुशिरःका स्वसरोक्तशे ॥ ७ ॥ तादयामास्य  
 चाङ्गेषुः शस्त्रोर्ध्वरसुसुतेभवते ॥ निम्नो निशित-सङ्गः चर्मचादापः  
 लोसुरं ॥ ८ ॥ अताद-य-मुक्षिसि-हः देव्यावाहन-मुत्तमम् ॥ तदि-  
 ते-वाहनदेवीः स्फुर-प्र-वासि-मुत्तमम् ॥ ९ ॥ निसुम्भस्यासु-चि-  
 छे-दः चर्मचाप-ह्य-च-इ-कम् ॥ छि-त्रे-चर्मराख-इ-शक्तिचि-

ठम  
 ५२

छेप-लोसुरं ॥ १० ॥ तामप्यस्य-विधा-चके-चके-नाभि-मुत्वागतम् ॥  
 कोपाध्मागो-निसुम्भो-थ-सुल-जग-ह-दा-त्रेव ॥ ११ ॥ श्री-पा-न-सुषि-पा-  
 तेन-देवित-आ-चु-र्ण-य-त ॥ अ-वि-ध्या-थ-ग-दू-लो-जि-वि-च्छे-प-च-रि-डः  
 का-प्र-ती ॥ १२ ॥ श-पि-दे-व्या-स्त्रि-सु-ले-ता-भि-ना-स्म-त्वे-मा-ग-ता ॥ त-त-व्य-र-भु-  
 ह-स्त-त्र-मा-या-त-न्दे-य-पु-ङ्ग-व-म् ॥ १३ ॥ अ-ह-त्य-दे-वि-वा-लो-र्ध्व-र-पा-त-य-त-भु-  
 र-लो ॥ र-स्मि-न्नि-परि-ठ-भु-मो-निसुम्भो-भी-म-वि-ज-म ॥ १४ ॥ ज्ञा-त-व्य-ता-



शावरी

५३

वेन कुंजः चयये हनुमन्विका ॥ १५ ॥ सरथस्य स्तथा सुखैः गृहितपर  
मायुधैः ॥ भुमेरसा निरतुलैः व्यापासेव च भोनभे ॥ १६ ॥ मायात-सुमालोके  
देविसर्वे मवादयत् ॥ १७ ॥ आसद-चापि धनुषश्च कारितिव च दुस्सहम्  
॥ पुरयामास कुरुभो निजघ-हास्वनेव च ॥ १८ ॥ समस्तदेवशै-न्या-न्याः  
नेभोवधविधापिणाम् ॥ दृशि होमहानादेत्याजिदेभमहामदे ॥ १९ ॥  
पुरयामाश गगणः आदशैवदिसोदश ॥ दृक्कालि शमुत्पत्य गगन-क्षेमाः

राम

५३

मतादयत् ॥ २० ॥ करभ्याव निनादेनः प्राक्क्षो नास्तेति रोहिता ॥ अदाः  
दृष्टात्मसिवः शिवदुतिच कारह ॥ २१ ॥ तेस्सर्दोर सुरास्तेषु सुम्भः को  
प-परयये ॥ दृष्टात्मतिष्ठतिष्ठेति व्यामहारा-विकायदा ॥ २२ ॥ दृष्टाभः  
ययत्यभिहित-न्देवेराकाशशंस्तिरे ॥ शुम्भेया गत्यशक्तिः सुम्भा-वा  
लाति भिषगा ॥ २३ ॥ प्रापाता वहिर्कुरुभाः शारिरस्ता-महोलुया ॥ २४ ॥  
विद-... ॥ २५ ॥ निर्धातनि-स्वनेवा



नस्तत्प्रतिता-सह-रः

॥ ~~॥~~ ॥ चक्षोः स्वशरीरे गेः ॥ ~~॥~~ ॥ ह भ्रस ॥ टटस्सा चरितुकाः  
कुंदाः सुगेभिः अधानतम् ॥ ~~॥~~ ॥ सतदाभिः ह तो भुमोः सुर्दितो निवप्राहः  
॥ ततो नि शुम्भस्स प्राप्यः चतना चकार्मुक ॥ ~~॥~~ ॥ आनधान शरीरे देवी काः  
लिके शरिते तथा ॥ पुनश्च कृत्वा वाङ् नामपुत दनुभवा ॥ ~~॥~~ ॥ चक्राः  
पुष्पेता दितिः छादयामाशः चरितुका ॥ ततो भगवती कुंदाः दुर्गाः

आशा अरुण  
ASHA ARCHIVES

893

एम  
५४